विनोबा निकेतन, त्रिवेन्द्रम के दौरे के अवसर पर प्रधानमंत्री का भाषण

3 सितम्बर, 2005
त्रिवेन्द्रम

देवियो और सज्जनो,

यह मेरे लिए बड़े सौभाग्य और सम्मान की बात है कि मैं आज यहां आपके साथ विनोबा निकेतन के इस पवित्र परिवेश में उपस्थित हूँ। यह एक तीर्थ स्थान है और मैं एक संत और एक व्यावहारिक आदर्शवादी को श्रद्धांजलि देने हेतु एक तीर्थयात्री के रूप में यहां आया हूँ। आचार्य विनोबा भावे के नाम के साथ जुड़ा कोई भी स्थान एक पवित्र स्थान है। विनोबा निकेतन के मामले में तो खास तौर पर यह बात सत्य है। यह स्थान काफी लम्बे समय से रचनात्मक कर्म का मंदिर रहा है।

आज यहां खड़े होकर मुझे याद आ रहा है कि विनोबा भावे का जन्म सितम्बर 1895 में ठीक उसी समय हुआ था जब स्वामी विवेकानंद शिकागो में विश्व धर्म संसद को सम्बोधित कर रहे थे। उसके कुछ वर्षों बाद महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में अपना पहला सत्याग्रह आरंभ किया। ऐसा बहुत ही कम देखने को मिलता है कि एक देश में एक ही पीढ़ी में इतनी महान विभूतियों ने एक साथ जन्म लेकर विश्व के मानवमात्र की सेवा की हो।

विनोबा भावे महात्मा गांधी के सर्वश्रेष्ठ तथा सच्चे अनुयायियों में से एक थे। उन्होंने स्वयं को महात्मा गांधी की ही छवि में ढाल लिया था और अपने जीवन काल में ही हमारे देश के लाखों लोग उनके अनुयायी बन गए थे। विनोबा जी ने आजादी के आंदोलन में भाग लिया और जेल की सजा काटी। इस वर्ष हमने दांडी यात्रा की 75वीं सालगिरह मनाई थी। महात्मा गांधी ने नमक कानून को तोड़ने हेतु की गई अपनी दांडी यात्रा के लिए अपने साथ जाने वाले 78 व्यक्तियों में विनोबा को भी शामिल किया था। वे महात्मा गांधी के उन शुरूआती शिष्यों में से थे जो साबरमती आश्रम के शुरू से ही गांधी जी के साथ वहां रहे।

गांधी जी ने विनोबा जी को साबरमती आश्रम के "दुर्लभ मोतियों" में से एक की संज्ञा दी थी। "एक ऐसा व्यक्ति जो वरदान लेने की इच्छा से नहीं बल्कि वरदान देने आया हो, कुछ पाने के लिए नहीं, बल्कि कुछ देने आया हो"। 1939-40 के दौरान जब दूसरा महायुद्ध शुरू हो गया तो भारत को भी अनचाहे उसमें कूदना पड़ा। हमारे राष्ट्रवादी नेताओं ने ब्रिटिश सरकार के फैसले के खिलाफ अहिंसक तरीके से अपना विरोध जताया। उन्होंने युद्ध के खिलाफ अपने विचार प्रकट किए और जनता के बीच अहिंसा का संदेश फैलाया। ब्रिटिश सरकार ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिए और गांधी जी के अहिंसा के संदेश को प्रचारित करने से प्रेस को रोक दिया। इससे प्रेरित होकर गांधी जी ने बोलने और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए व्यक्तिगत रूप से अकेले ही सत्याग्रह आरंभ कर दिया। उन्होंने उस सत्याग्रह का नेतृत्व करने के लिए विनोबा जी को चुना। समूचे देश से

विनोबा जी का परिचय कराते हुए उन्होंने बताया कि उन्होंने इस कार्य के लिए विनोबा का चयन क्यों किया? गांधी जी ने उन्हें एक ऐसा व्यक्ति बताया जो अपने हृदय से छुआछूत का हर निशान मिटा चुका था। उन्होंने संस्कृत, हमारे धर्मग्रंथों के ज्ञान तथा कुरान और अरबी की गहरी समझ के लिए विनोबा की प्रशंसा की। विनोबा जी ने कुष्ठ रोगियों और दरिद्रतम लोगों की सेवा करते-करते अपने आप को भी उन्हीं की तरह ढाल लिया था।

विनोबा जी ने स्वयं को महात्मा गांधी के रचनात्मक कार्यक्रम में पूरी तरह से तल्लीन कर लिया था। आजादी के पश्चात् वे वर्धा में महिला आश्रम के निदेशक बने और बाद में उन्होंने अपने ऐतिहासिक भूदान आंदोलन की शुरूआत की। विनोबा जी ने भूमि के लिए गरीब लोगों की जरूरतों को समझा और इसके लिए उन्होंने जमींदारों से अपील की। विनोबा जी के इस आह्वान पर बहुत से लोगों का व्यक्तिगत रूप से हृदय परिवर्तन हो गया और उन्होंने विनोबा जी की अपील को बड़े ही सकारात्मक ढंग से लिया। हजारों जमींदारों ने भूमिहीन गरीबों के हितार्थ अपनी-अपनी जमीनें दान कर दीं। विनोबा जी ने इस बात को पक्का किया कि दान की गई जमीन का कम से कम एक तिहाई हिस्सा दलितों को मिले। भूमिहीन गरीबों को सशक्त किए जाने की उनकी इस खामोश क्रान्ति को महान दार्शनिक तथा साहित्यकार बर्ट्रेंड रसेल ने एक "रक्तहीन क्रान्ति" कहा था।

विनोबा निकेतन समाज सेवा का एक प्रेरणादायी उदाहरण है। यह न केवल अपने असंख्य रचनात्मक कार्यों के माध्यम से लोगों के बीच पहुंच सका है बल्कि इसने हमारे समाज का नैतिक रूप से पुनरूत्थान करने का लक्ष्य भी रखा है। साम्प्रदायिक सद्भाव और शांति का सन्देश फैलाने में इसका योगदान उल्लेखनीय रहा है। यह जानकर मुझे खुशी हुई है कि यह निकेतन गरीब लोगों के उत्थान के लिए भी समर्पित भाव से कार्य कर रहा है। विनोबा भावे हृदय से इस बात को मानते थे कि राजनीतिक आजादी के साथ-साथ सामाजिक और आर्थिक समानता के लिए तटस्थ भाव से कार्य किया जाना चाहिए। उन्होंने उस कार्य को सर्वोदय के लिए किया जाने वाला कार्य कहा। उन्होंने अपनी सर्वोदय की योजना को अपनी पंचवर्षीय योजना बताया। उन्होंने विश्वास जताया कि यदि लोग इस योजना को कार्यरूप देने के लिए सच्चे मन से आगे आएं तो भारत में एक बड़ा अहिंसक आंदोलन आरंभ हो जाएगा।

मुझे यह देखकर बड़ी खुशी हुई है कि विनोबा निकेतन अपने समर्पित कार्य के जरिए उस संकल्पना को साकार करने का प्रयत्न कर रहा है। इस तरह के संगठन एक न्यायोचित, सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था कायम करने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों में सहायता करके बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं। मैं विनोबा निकेतन से जुड़े सभी लोगों की सफलता की कामना करता हूँ। ईश्वर आपका मार्ग प्रशस्त करे।

जय हिन्द